मैथिली अनिवार्य विषय (50 Marks)
स्नातक संवर्ग-II

Page No.:
Date : 18/04/2020

Maithili, 50 Marks (Arts, Science & Com.), Unit-4

परिणीता (कथा संग्रह) प्रो० वीणा ठाकुर

'बड़की माँ'

डॉ० अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा।
मो- 9040201409

एहि कथामे वर्तमान सामाजिक पारिवारिक जीवनक यथार्थ स्वरूपक आकलन कयल गेल अछि। मध्यवर्गीय परिवारक बदलैत स्वरूप आ एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीक मनोभावक आकलन प्रस्तुत कयल गेल अछि। आधुनिक कालमे लोक अविश्वास सँ भरल रहैत अछि। ककरो पर किओ विश्वास नहि करैत अछि। पिता पर पुत्रक अविश्वास एवं पुत्र पर पिताक अविश्वास। लोक पलायन कऽ रहल अछि। घरमे मात्र वृद्ध माय-बाप असगर रहैत छथि। पुत्र अपन परिवारक संग शहरमे रहय चाहैत छथि। अपन कर्त्तव्यक प्रति कोनो चिन्ता नहि रहैत छनि चाहे ओ कोनो कारण रहैत होयत। ई कालक युग धर्म भऽ गेल अछि। प्रो० वीणा ठाकुर युगधर्मक यथार्थता प्रस्तुत कयल अछि अपन कथाक माध्यमे। बड़की माँक पति डिप्टी इन्सपेक्टर छलाह। हुनक एक अति सम्पन्न परिवार छलनि।

आब बड़की माँ सेहो विधवा भए सासुर मे
रहैत छथि। बेटा विकास अपन परिवारक
संग शहर मे रहैत अछि। हिनक बड़क
घर मे बड़की माँ असगर रहैत छथि। गामके
ककरो कोनो समस्या होइत छैक तऽ ओकर
समाधान करैत छथि बड़की माँ। गामक
धी-बेटी विवाह भए गेलाक उपरान्त अपन
सासुर मे रहैत अछि। पुरुख सब अपन-अपन
काज-धन्धा मे लागल अछि। बोनिहार सब
सेहो बाहर चल गेल अछि; गाम मे केओ
नहि अछि, गाम एकदम सुन्न लगैत अछि।
एहि सब परिस्थितिक विषय मे बड़की माँ सोचि
रहल छलीह तखन पोता सँ सात-आठ बर्खक
पोता भरि पाँज कऽ पकड़ि लेने छन्हि। सूर्य
भगवानक देखबैत बड़की मे पोता सँ
कहैत छथि - ई भगवान छथि, हिनका लोक
उगैत सूर्यक पूजा करैत अछि, अस्त होइत
सूर्य पूजा केओ नहि करैत अछि। बड़की माँ
मन उदास भऽ जाइत छन्हि। पोता कहैत अछि-
फेर सूर्योदय होइत तखन लोक पूजा करत।
बड़की माँ दुलार करैत कहलन्हि- एखन
अहाँ बड़ छोट छी एतेक बात नहि
बुझबै। ई तँ छैक मानव जीवनक यथार्थ।
पोताक संग गप्प करैत बड़की माँ
केँ नीक लगलन्हि। आँगन आबि पिकनिका
बनाबय लेल कहला, चाह लगलाहे। तखन
पोता बाजल- दादी माँ ई की कऽ रहल छी
काल्हि अहाँ सेहो चल जाइब नेँ पिकनिका

Page No.:
Date : / /

बाबा के छठ दिन तक डेरा पर चारि-पाँच दिन तक खायब-पीयब बन्द भऽ गेल छलीन्ह। अहाँ हमर समय संगे रहितौं हमरो मोन होइत अछि जे बच्चा सब संगे रहि ओहा अपन घर, अपन गाम सँ अलग नहि रहि सकैत छी। आन ठाम हमरा नीक नहि लगैत अछि। ई गाछ विवाहक बाद तक गेल नऽ ओ माँ के कहलनि-माँ अहाँ सदिखन अपन जिद् पर अड़ल रहैत छी। अहाँ गाम मे असगर रहैत छी लोक की कहैत होयत? सब हमर अपवाद करैत होयत जे मायक कोनो परवाहि नहि छैक। और एहि घर मे की राखल अछि। एकरा बेचि क दिल्ली मे मकान ले लेब। एहि बात पर बड़की माँ के बड़ दुःख भेलनि। और अहाँक जन्म एहि घर मे भेल अछि। हम पहिल बेर एहि घर मे आयल रही। एहि घर सँ हमर जन्म-जन्मान्तरक सम्बन्ध अछि। एतय अहाँक पिताक आत्माक बास अछि। विवाह शहर आयब नहि भेलाह, बड़की माँ पुनः असगरे रहि गेली छ।

बड़की माँ घर मे असगरे बैसल बेलपत्र पर राम-राम लिखैत रहल छथि तखन सीता राम मास्टर आबि गेलाह। अधिक काल आबैत रहैत छथि। पतिक मरलाक बाद गामक गारपा ककरा सँ करताह ते एहि मौका लगा आबि जाइत छथि। एहि घर सँ ओ बड़ जुड़ल छथि। डिप्टी साहेब अपन रचना सँ हिनका पढ़ैत-लिखैत छलाह-छथि। ते एहि घर सँ

Page No.:
Date : / /

विशेष सम्बन्ध छनि किएक आबि के बड़कीमाँ
के भगवान बूझि लेने छथि।

थोड़ेक दिनक पश्चात

बड़की माँ अस्वस्थ भऽ खाट पकड़ लेलनि-
हम फुलवा, हाल मे सभ बाट गेलनि।
मास्टर साहेब डाक्टर सँ देखौलनि किन्तु पड़
ओ कहलनि जे शहर मे कोनो बड़का डाक्टर
सँ देखा दियौन्ह। चिकित्सा के किछु लिखि
देलथिन्ह। मास्टर साहेब कहलथिन्ह आब अहाँ
थोड़ेक दिन मे चिकित्सा लगा चल जाउ। बड़की
माँ किछु नहि बजलीह। ओ कहलनि सभ दिन
हम भगवान बुझैत छी आइ अहाँ सुनाउ।
भगवान बुझैत बुझैत ओ हम दिस ताकि
लगलीह। बीच-बीच मे मास्टर साहेब अपन
माँ के देखैत छलाह। मास चारि धरि पड़लाक
बाद बड़की माँ के निश्चल आँखि देखि किछु
सन्देह भेलनि। मास्टर साहेब आब त छलाह
कोन उपाय नहि ओ घबरा गेलाह। अपन घर
छिदा छोड़ल गेलाह। आजुक देखैत छथि जे
बेटा पुतहु मे झगड़ा भऽ रहल अछि। पुतहु
कहि रहल अछि जे हमहि बुढ़ा के बुढ़ारी मे
मे लाभ नहि होयत हिनक सबहक आइ बुढ़िया
लगा पड़ल रहैत छथि। ओकरो नहि लाज
होइत हैत हमहि बुढ़ारी मे।

हमरा बूझि मास्टर साहेब

निश्चेष्ट भऽ जेंन्धि ठाढ़ भऽ गेला। जे
चल जाइत अछि से भाग्यशाली होइत अछि। हमहि
नव पीढ़ीक विडम्बना के बुझि सकैत अछि।
ईश्वर सभ के रक्षा करथु। डा॰ अरविन्द झा

मो॰- 9040201409

Scanned with CamScanner